अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

मध्य गंगा घाटी में प्रारम्भिक लौह युगीन और आरम्भिक ऐतिहासिक युगीन कला

डा0 सुबास चन्द पाल

वास्तुकला–

लोहे के प्रचलन के प्रारम्भिक समय में वास्तु कला में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ था। लेकिन एन. बी. पी. संस्कृति के मध्यकाल से कई नवीन आयाम प्रकाश में आने लगे। पक्की ईटों से भवन निर्माण कला के क्षेत्र में भी इस काल में उल्लेखनीय प्रगति हुई। इस दिशा में सर्वत्र एक जैसी प्रगति हुई। अधिकांश उत्खनन सीमित तथा सूच्यांक (इन्डेक्स) प्रकार के हैं इसलिए वास्तुकला के विषय में प्राप्त जानकारी अपूर्ण एवं एकांगी है। यद्यपि इस काल में भी मिट्टी, घास–फूस और बांस– बल्ली के बने हुए कच्चे मकानों का निर्माण होता रहा तथापि मट्टे में पकाई गई ईटों का प्रयोग भवनों के निर्माण के लिए अधिकाधिक मात्रा में होने लगा। हस्तिनापुर, अतरंजीखेड़ा मथुरा, कौशाम्बी, राजघाट, उज्जैन तथा बहाल के उत्खननों में प्रमाण मिलते है। नगरों की सुरक्षा के लिए रक्षा–प्राचीर' तथा 'परिशा' के निर्माण के प्रमाण अहिच्छा, कौशाम्बी–राजगृह तथा उज्जैन आदि से प्राप्त हुए है। रक्षा–प्राचीरों का निर्माण मिट्टी के बने हुए मीटों के रूप में किया जाता था। कभी–कभी रक्षा प्राचीरों को बाहरी सतहों पर पकी हुई ईट चुन दी जाती थी ताकि रक्षा–प्राचीर और अधिक मजबूत हो जाये। इस काल के नगरों के कुछ भवनों में स्वच्छता तथा सफाई की दृष्टि से मृत्तिका वलय कूपों (टेराकोटा रिंगवेल) एवं सछिद्र घड़ों को जोड़कर सोख्ता गढ्ढों (सोकेज पिट्स) का निर्माण किया जाता था। कौशाम्बी में पकी ईटों की बनी हुई टंकी और खुली नालियों तथा मिट्टी के पाइपों (पाटी पाइप डेन्स) की बनी हुई सार्वजानिक नालियों इस काल के स्तरों से मिलती हैं। इस प्रकार के प्रबन्ध सफाई एवं स्वच्छता के परिचायक है।

मृण्मूर्तियां–

एन. बी. पी. सांस्कृति काल में मृण्मूर्तियों के निर्माण के क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति हो चुकी थी। पूर्ववर्ती काल की मृण्मूर्तियों की तुलना यदि इस काल की मृण्मूर्तियों से की जाय तो यह भेद अधिक स्पष्ट हो जायेगा। हाथी, घोड़ा वृषभ, कुत्ते, भेंड़, हिरण आदि पशुओं और कच्छप, सर्प आदि सरीसृपों एवं चिड़ियों की हस्त– निर्मित मूर्तियों हैं। पशुओं की मृण्मूर्तियों

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

का निर्माण अत्यन्त कुशलता के साथ किया गया है। पशुओं की मृण्मूर्तियों को छोटे–छोटे गोलों (सर्किलेट्स) कि ठप्पे लगाकर (पन्च) गहरे रेखांकन (डीप अनसाइज्ड लाइन्स) तथा किसी चीज को दबाकर बनाई गई पत्तियों (इम्प्रेस्ड लीक डिजाइन्स) के द्वारा सजाया–सवांरा जाता है। अधिकांश मृण्मूर्तियों लाल रंग की हैं जिनके ऊपर गेरू कि गहरे घोल का प्रलेप (रेड स्लिप) चढाया गया है। धूसर तथा काले रंग की पशु–मृण्मूर्तियों के उदाहरण भी अहिच्छत्र, मथुरा, तथा वैशाली आदि से मिले हैं। यह उल्लेखनीय है कि बक्सर से पीले रंग की खड़ी रेखाओं से अलंकृत पशु–मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं।

पशुओं की मृण्मूर्तियों के अलावा मानव मृण्मूर्तियों भी उपलब्ध हई। प्रायः अधिकांश पशु मृण्मूर्तियों हाथ से बनायी हुई मिलती हैं। मानव मृण्मूर्तियों के सांचे में ढालकर बनाये गए कतिपय नमूने भी मिले हैं। हस्त–निर्मित मानव मृण्मूर्तियों में हाथों और पांवों का निर्माण स्टम्प अथवा डण्डे के रूप में किया गया है। आंखों को एक छोटे वृत्त अथवा केवल रेखांकन के द्वारा और बालों को प्रदर्षित करने के लिए सिर पर गहरी रेखाएं खींच दी गयी हैं, तथा नाक बनाने के लिए मिट्टी को चुटकी से दबा दिया गया है। परवर्ती चरण में बड़े–बडे कर्णपटल (ईयरलोब्स) और उनमें चक्राकार कर्णफूल गले में भारी कामदार हारावली आदि का निर्माण चिपकवां विधि से किया गया है। स्त्री–मृण्मूर्तियों को भव्य शिरो–वेशभूषा, कर्णाभरण एवं हारावली से अलंकृत किया गया है। स्त्री मृण्मूर्तियों के बस्त्रालंकरण पर्याप्त तथा लहाराते हुए (फ्लोइंग) बनाये गये हैं। हस्तिनापुर के उत्खनन से एन.बी.पी. परम्परा के परवर्ती स्तर पर (लेट लेविल) से प्राप्त प्रोशित नवोढ़ा की मूर्ति विशेष और छोटे–छोटे पावों उल्लेखनीय है। ऊर्ध्ववसना तन्वंगी के प्रमुख नितंबों तथा पीन पयोधरों का रूपायन बड़ा ही मनोहर बन पड़ा है। इसके बायें हाथ में एक तोता बैठा हुआ हैं। दाहिने हाथ में फलों का गुच्छा है। ऐतिहासिक काल में इसी कथा– वस्तु को लेकर मृण्मूर्तियों ही नहीं अनेक प्रस्तर मूर्तियों का भी निर्माण हुआ है। हस्तिनापुर तथा कुम्रहार के उत्खनन से प्राप्त कतिपय मृण्मूर्तियों के तन्वंगी, मृदुल पावों वाली बनाया गया हैं। हस्तिनापर से प्राप्त मानवीय– मण्यमूर्ति की भी इस संदर्भमें चर्चा की जा सकती है। मूर्ति की मुखाकृति मानव (हयूमन फेस) की ओर शरीर पशु (एनिमल बाडी) का है। ठुड्डी को चुटकी से दबाकर इस प्रकार बनाया गया है ताकि दाढी (बीयर्ड) की भांति प्रतीत हो। इस मृण्यमूर्ति के पूरे शरीर को गोलाकार छापे लगाकर सजाया गया है गर्दन के निचले भाग में एक छिद्र बना है जिसमें संभवतः एक डोरी डालकर इसको आगे–पीछे झुलाया

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

जा सकता है। मृण्यमूर्तियों का निर्माण खिलौनों के रूप में तो होता ही रहा होगा लेकिन इस बात की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है कि इनमें से कुछ के निर्माण के पीछे धार्मिक विश्वासों का भी कुछ हाथ रहा होगा। मृण्मूर्तियों के अतिरिक्त एन.बी.पी. के स्तरों से प्राप्त लेखरहित सिक्के ढालने के सांचों का भी उल्लेख किया जा सकता है। मिट्टी की बनी हुई राजमुद्रायें (सील्स), राजमुद्राक (सीलिंग्स) कुम्भकार की थापी (पार्ट्स डैबर्स) और कुम्भकार के ठप्पे (पार्ट्स स्टैस्प) भी प्राप्त हुए है।

एन.बी.पी. पात्र परम्परा के लोगों ने अपनी परिष्कृत अभिरूचि का परिचय विभिन्न प्रकार के आभूषणों के निर्माण के माध्यम से दिया है, उदाहरण के लिए विभिन्न पुरास्थलों के उत्खनन से एन०बी०पी० के स्तरों से माणिक्य के मनके और चूडियों कड़े तथा अंगूठियों मिली है। तामडा पत्थर गोमेद तथा कांच के बने हुए बेलनाकार गोलाकार एवं त्रिभुजाकार मनके अधिक प्रचलित थे। चूड़ियों बनाने के लिए तांबे का विशेष रूप से उपयोग किया जाता था। इसके अतिरिक्त मिट्टी, माणिक्य, कांच हाथीदांत, हडडी आदि के बने हुए मनके चूडियों और अंगूठियों मिली है। प्रसाधन सामग्री में अंकन–शलाकाएं तांबे की बनी हुई पिनें हड्डी और हाथीदांत की बनी हुई कंधियाँ, नख–कर्तन (नेल पैरेटर्स) एवं मृण्मय देह–मर्दक या झांवा (टेराकोटा फ्लेश–रबर्स) आदि की भी गणना अन्य उल्लेखनीय पुरावशेषों में की जा सकती है। एन0बी0पी0 पात्र परम्परा के उत्खनित पुरास्थलों से बहुत बड़ी संख्या में हड्डी के बने हुए उपकरण प्राप्त हुए हैं। इनकों पुराविदों ने बाण–फलक (ऐरोप्वाइंट्स) या अस्थि निर्मित बेधक (बोन प्वाइन्ट्स) तथा लेखनी (स्टाइल) आदि नाम दिये हैं। यदि इन्हें बाण–फलक मान लिया जाय तो यह सम्भावना है कि पक्षियों आदि का शिकार करने में इनका उपयोग होता रहा होगा। यदि स्टाइल या लेखनी कहें तो फिर यह मानना पड़ेगा कि ये लिखने के काम में आती रही होगी।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल एन0बी0पी0 काल में लोगों के सांस्कृतिक जीवन में पर्याप्त प्रगति हो चुकी। जीवन अत्यन्त जटिल हो चुका था। 'नगरीय क्रान्ति के फलस्वरूप भौतिक जीवन काफी समृद्ध हो गया था।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

चिराँद के प्रारम्भिक लौह काल की कला काल द्वितीय–ब (लगभग 1000–600 ई.पू.)

काल द्वितीय–ब को काल द्वितीय– अ से लोहे के प्रादुर्भाव के आधार पर भिन्न किया जाता है। लौह वस्तुओं में जंग लगे एक ब्लेड का टुकड़ा उत्खनन में प्राप्त हुआ। परन्तु इस काल हडडी के टुकड़े और साथ में किसी जानवर की खोपडी भी मिली है। इनके अलावा स्तरित जमाव से कुछ लघुपाषाण उपकरण, उपकरण कोर फलक, अस्थि बाणाग्र, पिन मिटटी की बनी पक्षियों की तप मूर्तियों तांबे की चूडियों, वे कई चूल्हे भी देखे गये। इस काल की अन्य वस्तुओं में पकी मिटटी की उत्कीर्ण आकृतियो टेराकोट के मनके एवं लाकेट आदि महत्वपूर्ण प्राप्त है। आबादी के सतर में नाशपात्याकर मनके तथा पशु पक्षी एवं मछली के हड्डियों का उल्लेख किया जा सकता है।

चिराँद के प्रारम्भिक लौह काल की काल– तृतीय (लगभग 600–200ई.)

चिराँद के काल –3 जो उत्तरी कृष्णमार्जित मुदद्माण्ड की सतह है इससे कुछ अस्थि उपकरण प्राप्त होते हैं। ये सभी तथ्य इस बात का संकेत देते हैं कि पाषाण तथा धातु के प्रयोग होने के बाद भी अस्थि उपकरण बनाने की परम्परा बनी हई थी परन्तु इन उपकरणों की क्रियात्मक उपयोगिता बहुत सीमित हो गई थीं।

इस काल में कृष्ण लोहित गृद्माण्ड के साथ–साथ उत्तरी कृष्णमार्जित मृद्माण्डों का प्रयोग होने लगा था। पीटकर बनायें गये फर्श के चिन्ह सेक्सन पर देखे गए। इस काल के ऊपरी स्तर में पकी इंट के दीवार का चिन्ह भी पाया गया था। सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि दाहोत्तर अवशेष शवाधान है। शवाधान स्थल से पशुओं की अस्थियों व मृद्भाण्ड जिनमें दीर्घाकार कलश, चोंचदार बड़े बेसिन, सछिद्र गोलाकार सपाट कटोरा प्राप्त हुआ। शवाधान गर्त से उत्तरी कृष्णमार्जित मृद्माण्ड के कुछ टुकडे भी प्राप्त हुए। इस काल में पुरावशेषों में एक नव पाषाणिक परशु तांबे की जर्जर शलाकाएं, पत्थर के कर्ण आभूषण, अर्धरत्न पत्थर के मनके, एक सछिद्र शीर्ष, पेन्टेड, पत्थर की छोटी–छोटी गोलियों, चक्की, पकी मिट्टी के खिलौने, गाड़ी पशुओं की आकृतियाँ हड्डी के बने पिन पाषाण उपकरण उल्लेखनीय है इनके अलावा साँचे के दबे सिक्के तथा चांदी और तांबा के आहत सिक्के भी देखे गए।

काल– चतुर्थ (लगभग 200 ई.पू. 300 ई.)

इस काल से दो निर्माण कालों की पकी ईटों की संरचना प्राप्त हुई। साथ ही साथ 88 कुषाण सिक्कों का ढेर मिला जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी क्योंकि इससे बिहार में

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

कुषाण शासन की पुष्टि होती है। अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धियों में पकी मिट्टी की मनुष्य आकृतियों, जिन पर विशिष्ट कुषाण शिरोवस्त्र है, पत्थर और पकी मिट्टी के मनके, कर्णाभूषण, पशु आकृतियों मृद्भाण्ड, लोहे तांबे की वस्तुओं तथा अस्थि के बने पॉसे भी इस काल से प्राप्त हुआ है। लाल पत्थर की आठ मीनार तथा चक्रयुक्त एक छोटा सा नमूना प्राप्त हुआ है। अन्य अवशेषों में एक सील, मूसल तथा कोई पवित्र वस्तु रही हो। अन्य अवशेषों में एक सील, मूसल तथा स्पन्ज जैसी लाल रंग की रगड़ पट्टी उल्लेखनीय है।

प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल विशेषतः मौर्य शुंग और कुषाण कालीन धरातल में झूसी के उत्खनन से भी महत्वपूर्ण स्थापत्य कला के प्रमाण मिले हैं। शुंगयुगीन कक्ष और कुषाणयुगीन भवन विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं।

सहायक ग्रन्थ–सूची

1. गुप्त 1995 प्री एन. बी. पी. काल्चर्स आफ दि मिड गंगा वैली, अगम प्रसाद माथुर फेलीसिटेशन वाल्यूम नं0 3. आगरा हुजूरी भवन, पीपल मण्डी, पृष्ठ 21–34। पाण्डेय, नैना, 2010 प्रोसेस आफ आर्गनाइजेशन इन दि गैंगेटिक वैली आर्कियोलाजिकल पर्सपेक्टिव, आर्यालजी आफ दि गंगा बेसिन : पैराडाइम शिफ्ट (सम्पादक–विभा त्रिपाठी), शारदा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली पृष्ठ 315–380।
2. मिश्र, वी.डी.और प्रज्ञा मिश्र (2006), दि अर्ली हिस्ट्री आफ दि मिडिल गंगा प्लेन दि एन.बी. पी. घेयर कल्चर : दि सेकेण्ड अर्बनाइजेशन एण्ड दि बुद्ध उदयन न्यू होराइजन्स इन हिस्ट्री क्लासिक्स एण्ड इन्टर कल्चरल स्टडीज (सम्पादक अतुल कुमार सिन्हा और अभय कुमार सिंह अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स (प्रा0) लिमिटेड, नई दिल्ली पृष्ठ 340–356।
3. त्रिपाठी, विभा, प्रहलाद उपाध्याय और सुरेन्द्र कुमार यादव (2010), ए फेश पैराडइम फार इन्टरप्रेटिंग सेटेलमेन्ट आफ द गंगा प्लेन विद स्पेशल रिफरेंश अ अनाय एक्सकैवेशन्स, आर्यालजी आफ दि गंगा बेसिन : पैराडाइम शिफ्ट (सम्पादक विभा त्रिपाठी), शारदा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली पृष्ठ 387 –401।
4. उपाध्याय, प्रभाकर (2010). मिनरल रिसोर्स फार एन्शिएन्ट कल्चर आफ द मिडिल गंगा प्लेन्स 2 ब्रीफ इनवेस्टीगेशन आफ द पोटेन्शियल एरिया, आर्यालजी आफ दि

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

गंगा बेसिन पैराडाइम शिफ्ट एरिया (सम्पादक विभा त्रिपाठी), शारदा पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, पृष्ठ 421–422।

5. यादव सुरेन्द्र कुमार 2010 रीडिस्कवरिंग ओल्ड रिवर बरूना इन काशीः इकोलाजिकल एण्ड आफ दि गंगा बेसिन : पैराडाइम शिफ्ट त्रिपाठी), शारदा पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, पृष्ठ 562–571।
6. अग्रवाल, पी.के. (2010), आइडेन्टिफिकेशन आफ कुम्भाण्ड फीगर्स इन अर्ली टेराकोटाज आफ द गैंगेटिक प्लेन, आर्यालजी आफ दि गंगा बेसिन पैराडाइम शिफ्ट (सम्पादक विभा त्रिपाठी), शारदा पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, पृष्ठ 507–514।
7. मनी, बी.आर. (2010), कुषाण इन गंगा प्लेन कनफरमेटरी एविडेन्स एण्ड इम्पैक्ट्स, आर्क्यालजी आफ दि गंगा बेसिन : पैराडाइम शिफ्ट (सम्पादक विभा त्रिपाठी), शारदा पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, पृष्ठ 381–386।
8. निहारिका, (2010), बीड्स आफ वाराणसी विद स्पेशल रिफरेन्स टु राजघाट एण्ड सारनाथ, आर्यालॉजिकल आफ दि गंगा बेसिन पैराडाइम शिफ्ट (सम्पादक विभा त्रिपाठी), शारदा पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, पृष्ठ 443–450।
9. कानूगो, ए. के. (2010), एन्टीक्विटी आफ ग्लाय इन इण्डिया एक्सकैवेशन एट कोपिया, आर्यालॉजी आफ दि गंगा बेसिन पैराडाइम आर्यालॉजिकल आफ दि गंगा बेसिन : पैराडाइम शिफ्ट (सम्पादक विभा त्रिपाठी), शारदा पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, पृष्ठ 451–476।
10. तिवारी, ऊषा रानी और दुर्गा नन्दन तिवारी, (2010), बुद्ध इन सम्बोधि इन द कान्टेक्स्ट आफ सारनाथ स्कूल, आर्यालजी आफ दि गंगा बेसिन पैराडाइम शिफ्ट (सम्पादक विभा त्रिपाठी), शारदा पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, पृष्ठ 514–517।
11. सिंह, अमर (2010), आर्किटेक्चर आफ अर्ली बुद्धिस्ट मॉनिस्टरी इन द मिडिल गंगा प्लेन, आर्यालजी आफ दि गंगा बेसिन : पैराडाइम शिफ्ट (सम्पादक विभा त्रिपाठी), शारदा पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, पृष्ठ 529–537।
12. श्रीवास्तव अजय, (2010), सम मास्टर पीसेज ऑफ सारनाथ म्यूजियम आर्यालजी आफ दि गंगा बेसिन : पैराडाइम शिफ्ट (सम्पादक विभा त्रिपाठी), शारदा पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, पृष्ठ 518–529।